अज्ञान–ज्ञान

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

जीवन में ज्ञान सबसे महत्वपूर्ण चीज है। हर कार्य के लिए ज्ञान होना चाहिए। ज्ञान के बिना जीवन अधूरा है। ज्ञान मुक्ति का साधन है। इसीलिए कहा गया है कि ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः अर्थात् ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं मिल सकती। चलने, फिरने, रहने, खाने, पीने, जानने का सम्यक् ज्ञान होना चाहिए। ज्ञान से व्यवहार चलता है। बाह्य ज्ञान के माध्यम से लौकिक व्यवहार संचालित होता है। ज्ञान के साथ जब राग–द्वेष मिल जाता है तो अज्ञान बन जाता है। अन्तःकरण भीतर होता है। मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार अन्तःकरण बनाते हैं। पाँचों इन्द्रिया बाह्य जगत से विषयों को लेकर मन को देती है। मन योजना बनाता है। वर्तमान, भूत और भविष्य के बारे में चिंतन मनन और कल्पना करना मन का कार्य है। मनुष्य को वर्तमान में जीना चाहिए। मन विषयों को ग्रहण कर बुद्धि को प्रदान करता है। आत्मा की शक्ति को चित्त कहते हैं। चित्त कोशिकाओं को संचालित कर देता है। चेतना ही सब कुछ है। बिना चेतना के सब कुछ व्यर्थ है। चेतन तत्व संचालित करता है चेतना की शक्ति से चित्त चलता है।

स्थूल शरीर को चेतना की शक्ति संचालित करती है। अहंकार, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग–द्वेष से युक्त है। अहंकार से ज्ञान अज्ञान बन जाता है। राग–द्वेष के माध्यम से कषाय होता है। चौरासी लाख जीव योनियों में भटकाने वाला अहंकार है। अहंकार का कारण अज्ञान है। ज्ञान अपने स्वरूप की अनुभूति करना है और अपने स्वरूप को न जानकर बाह्य वस्तुओं में भटकना सबसे बड़ा अज्ञान है। जब तक यह अनुभूति नहीं होती कि आत्मा ही सब कुछ है तब तक अज्ञान रहता है। अज्ञानी व्यक्ति संसार में भटकता रहता है। ज्ञान को प्राप्त करने के लिए सच्चे गुरू की आवश्यकता होती है। बिना गुरू के ज्ञान नहीं होता।

अज्ञान विभाव है और ज्ञान स्वभाव है। किसी भी वस्तु का अपने मूल स्वरूप में रहना स्वभाव है। विभाव इसका ठीक विपरीत है। पानी का स्वभाव है शीतलता। यदि पानी को गर्म कर

दिया जाये तो पानी के स्वभाव में परिवर्तन हो जाता है। इसी तरह आत्मा का ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप में परिणत होना उसका स्वभाव है। काम, क्रोध, मद, लोभ इत्यादि कषाय विभाव हैं। आत्म शुद्धि साधनं धर्म इस परिभाषा के अनुसार धर्म वह तत्व है, जिससे आत्मा शुद्ध होती है। आत्मा मूल रूप से ज्ञानस्वरूप है। वस्तु का स्वभाव ही धर्म कहलाता है। जो इतर चीजें होती है वह विभाव हैं। जैसे पानी का गुण है शीतलता, अग्नि का स्वभाव है उष्णता। जब उनके गुण को विकृत किया जाता है तो उनका स्वरूप बदल जाता है। जब वह अपने स्वरूप में रहता है तो वह तत्व स्वभाव कहलाता है।

आत्मा स्वभाव से एकरूप, एकरस है। स्वभाव व्यक्ति को व्यक्ति से जोड़ता है क्योंकि सभी मानव एक समान हैं। जब धर्म, जाति और वर्ग के अनुसार उनका वर्गीकरण कर दिया जाता है तब धर्म और सम्प्रदाय का ठप्पा उन पर लग जाता है। यही विभाव है। एक उदाहरण के द्वारा इसको समझा जा सकता है। धर्म को सम्प्रदाय की जंजीर से बांध दिया जाता है तो धर्म विकृत हो जाता है। भारत में अनेक धर्म हैं– जैन, बौद्ध, सिक्ख, इस्लाम, पारसी और हिन्दू धर्म। ये सब सम्प्रदाय हैं। सबकी अपनी–अपनी पूजा पद्धति और उपासना पद्धति है और उस पूजा पद्धति के अनुसार धर्म को संकीर्ण कर दिया जाता है, स्वभाव को विभाव में बदल दिया जाता है। धर्म मानव को मानव से जोड़ता है। धार्मिक क्रियाकलाप के आधार पर मानव अपने आस्था को प्रकट करता है। सुख–दुःख, मोक्ष इत्यादि तत्वों को प्राप्त करता है।

श्रीमद्भगवद्गीता जो कि हिन्दू धर्म का एक प्रसिद्ध ग्रंथ है, इसमें आत्मा की अजरता अमरता का बड़ा दार्शनिक विवेचन किया गया है। इसमें बताया गया है कि शरीर नश्वर है और आत्मा अजर–अमर। जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर नये वस्त्रों को धारण करता है, वैसे ही आत्मा पुराने शरीर को त्यागकर नये शरीर को धारण करता है। शरीर पंचभूतात्मक है। आत्मा इससे परे है। शुद्ध आत्मा ज्ञान दर्शन और चारित्र से युक्त है। आत्मा अरूपी है किन्तु जब यह शरीर को धारण करती है तो यह रूपी कहलाने लगती है। सच्चिदानन्द आत्मा का स्वभाव है और शरीर में आने के पश्चात् आत्मा की विभाव परिणति हो जाती है। आत्मा और शरीर दोनों भिन्न–भिन्न हैं। आत्मा चेतनायुक्त हैं और शरीर पंचभूतात्मक है। पंचभूतों में समय–समय पर परिणति होती रहती है। स्वभाव में परिवर्तन नहीं होता, किन्तु विभाव बदलते रहते हैं।

परमार्थ की चेतना जागृत हो जाने पर सब कुछ हेय प्रतीत होने लगता है। परमार्थ की भावना मोक्ष की भावना है। मानव के जीवन का अंतिम लक्ष्य मोक्ष है। अपने स्वरूप में स्थित हो जाना ही मोक्ष कहलाता है। दूसरे शब्दों में आत्मा का परमात्मा में विलय मोक्ष है। जीवन का अंतिम उद्देश्य मोक्ष है। मोक्ष के स्थित में कामनाओं का त्याग हो जाता है और आत्मा राग–द्वेष मुक्त हो जाती है। इस स्थित में सच्चिदानन्द ब्रह्म की अनुभूति होती है। मोक्ष परमार्थ है, कूटस्थ नित्य है, आकाश के समान सर्वव्यापी है, सभी विकारों से शून्य है। नित्य तृप्त है, अवयवों से रहित है, स्वभाव से स्वयं प्रकाश है।